WORKING TO EMPOWER

नई बचाव तकनीक

एड्स कोई नया विषय नही है कि किसी को समझने मे कोई कठिनाई हो. पिछले 30 वर्षो से यह बिना रुके अखबारो और समाचारो मे छाया हुआ है. 2006 मे, 43 लाख नये मामले दर्ज किये गये है और 29 लाख लोगो की मृत्यु एड्स के कारण हुई. समस्त एड्स पीड़ित मे से 95 प्रतिशत अविकसित देशो मे रहते है और 90 प्रतिशत को यह भी नही पता कि वह इस रोग से ग्रस्त है. आज एड्स का कोई इलाज नही है किंतु यह लेख यह बताता है कि कैसे टीको, किटाणुनाशको, लिंग परिच्छेदन और ग्रस्त होने से पहले प्रोफिलैक्सिस आदि से कैसे, एच0आई0वी0 को विश्व भर मे फैलने से रोका जा सकता है.

वर्तमान मे एड्स का कोई टीका उपलब्ध नही है, किंतु बहुत से उपाय उपलब्ध है और बहुतो का विकास किया जा रहा है. अंतत: एड्स का टीका ही कई लोगो के लिये आशा की अकेली किरण है किंतु यह कई कठिनाईयो मे घिरी हुई है. प्रयोगशाला का प्रयोग लम्बे और महंगे होते है. छ:ह से दस वर्ष तक चलने वाले प्रयोग की कीमत 23 करोड़ डॉलर तक हो सकती है. इतनी धन और समय की आवश्यक्ता के कारण, एड्स के टीके पर शोध इतनी धीमी गति से चल रहा है. कुछ अन्य उपायो के विकास पर प्रयोग, विश्व भर मे हो रहे है.

किटाणुनाशक वह पदार्थ होते है जो एच0आई0वी0 और अनय सेक्स संक्रामक रोगो के संक्रमण को सीमित करते है. यह किटाणुनाशक, सतही पदार्थ होते है, जैसे जेल और क्रीम. वर्तमान मे कोई भी ऐसा किटाणुनाशक बाज़ार मे उपलब्ध नही है, किंतु आगामी पांच वर्षो मे उपलब्ध हो जायेगा. यह किटाणुनाशक गर्भाशय के निचले भाग की भी सुरक्षा करेगा. यह भाग बहुत ही नाज़ुक होता क्योकि उसकी त्वचा पर केवल एक कोशिका की परत होती है.

आदर्श रूप से यह किटाणुनाशक अन्य सेक्स संक्रामक रोगाणुयो के विरुद्ध भी कार्य करेंगे और महिलाओ को गर्भवती होने से बचायेंगे. यह लम्बे समय तक सक्रिय रहेंगे, बिना हानि पहुचाये त्वचा पर एक परत बनाये रहेंगे. यह त्वचा मे सरलता से विसरित नही होंगे और गर्भाशय के वातावरन का संतुलन को बनाये रखेंगे. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह इतने महंगे नही होंगे कि यह सभी देशो के लोगो की पहुच के बाहर हो. इन किटाणुनाशको को हानि कम करने वाले उपाय के रुप मे जनता के बीच पहुचाया जायेगा. यह कंडोम के साथ अतिरिक्त सुरक्षा के लिये, प्रयोग किये जायेंगे और घर्षण कम करेंगे और अधिक आनंद देंगे. शोधकर्ताओ को अभी तक यह नही पता कि सभी किटाणुनाशक गुदा के लिये सुरक्षित है या नही. यह जानना आवश्यक है कि यह सुरक्षित है, क्योकि अगर यह सुरक्षित नही है तो किटाणुनाशक के डिब्बे पर यह चेतावनी देना आवश्यक. गर्भाशय के लिये किटाणुनाशक, गुदा के किटाणुनाशक से पहले बाज़ार मे उतारे जायेंगे. गर्भाशय की त्वचा पर 40 कोशिकाओ की परते होती है, जबकि गुदा कि त्वचा एक कोशिका की ही परत होती है.

वर्तमान मे उत्तरी अमेरिका, यूरोप और अफ्रीका मे, किटाणुनाशको पर प्रयोग किये जा रहे है. पहली पीढी के किटाणुनाशको के 40-60 प्रतिशत तक प्रभावशाली होने का अनुमान है. दूसरी पीढी को 60-80 प्रतिशत तक प्रभावशली होना चाहिये. फिरभी फरवरी 2007 मे दक्षिण अफ्रीका मे किये जा रहे प्रयोग, सुरक्षा कारणो से रोक दिये गये. ऐसा पाया गया कि एक प्रयोग महिलाओ के एच0आई0वी0 से संक्रमित होने की सम्भावना को बढा रहा था.

शोधकर्ताओ ने कहा कि वे आगे चल कर अन्य प्रयोग करते रहेंगे और इस घटना को किटाणुनाशको पर शोध और प्रयोग का अंत नही बनने देंगे.

रोग से ग्रस्त होने से प्रयोग की जाने वाली प्रोफिलैक्सिस, एक ऐसी दवा है जो स्वस्थ्य लोगो को एच0आई0वी0 संक्रमण से बचने के लिये प्रतिदिन एक खुराक लेनी होगी. यह दवा 100 प्रतिशत प्रभावशाली नही है और इसे प्रतिदिन लेना होगा. वर्तमान मे इस पर बोत्सवाना, घाना और पेरू मे प्रयोग चल रहे है किंतु परिणाम 2008 या 2009 तक आने की आशा है.

पुरुषो मे लिंग परिच्छेदन एच0आई0वी0 संक्रमण रोकने का एक और उपाय है. वर्ष 2005 मे किये गये "ओरेनज फार्म इंटर्वेंशन" प्रयोग से पता चला कि लिंग परिच्छेदन से पुरुषो के एच0आई0वी से संक्रमित होने की सम्भावना 60 प्रतिशत तक कम हो जाती है. आंक़डो से अनुसार यह स्पष्ट है कि जिन देशो मे लिंग परिच्छेदन की दर अधिक होती है वहां एच0आई0वी0 संक्रमण की दर कम होती है. किंतु शोधकर्ताओ को धार्मिक और सामाजिक समुदायो को समझकर ही यह सलाह देनी चाहिये. उन्हे यह सुनिश्चित करना चाहिये कि यह प्रक्रिया स्वच्छ वातावरण मे की जायेगी. केन्या और युगांडा मे यह जानने के लिये कि क्या इस प्रकिया से महिला साथियो मे संक्रमण की दर कम होती है, प्रयोग चल रहे है और परिणाम के 2007 मे आने की आशा है.

अंत मे, एड्स को फैलने से रोकने के लिये हर्पीस को रोकना भी एक उपाय है. सहारा के निकटवर्ती अफ्रीकी भाग मे कुल जनसंख्या मे 70 प्रतिशत तक हर्पीस से ग्रस्त है. कैनेडा मे हर 5 या 6 लोगो से एक इस रोग का शिकार है. शरीर कि रोग प्रतिरोधी प्रणाली हर्पीस के छालो को भरने का प्रयास करती है, जिसके कारण घाव के निकट प्रतिरोधी कोशिकाओ की संख्या अधिक होती है, यदि यह घाव एच0आई0वी0 संक्रमित द्रव्य के निकट आता है तो, संक्रमण होने की सम्भावना बहुत अधिक हो जाती है. यह बहुत आवश्यक है कि एच0आई0वी0 संक्रमित लोगो मे हर्पीस रोका जाये, क्योकि यदि यह वायरस सक्रिय रहता है तो यह एच0आई0वी0 वायरस को सरलता से बढने देता है. एच0आई0वी0 संक्रमण रोकने मे हर्पीस रोकने के प्रभाव को जांचने के लिये दो बड़े स्तर के प्रयोग लैटिन अमेरिका और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका मे चल रहे है. इनके परिणम 2007 या 2008 तक आने की आशा है.

पिछले करीब बीस वर्षो से, इन सुरक्षात्मक उपायो के विकास और सम्बंधित शोध का धन सरकार और अन्य प्रतिष्ठानो से आ रहा है. यह बहुत आवश्यक है कि अन्य लोगो को भी इन अज्ञात विकास के बारे मे पता चले. हमे समुदायो को इस विषय मे बताकर उन्हे प्रेरित करना होगा, जिससे समुदाय की शक्ति बढे, शोध किये जा सके और इन समस्याओ की रोकथाम हो सके.